कक्षा छठी

नजानू कवि बना

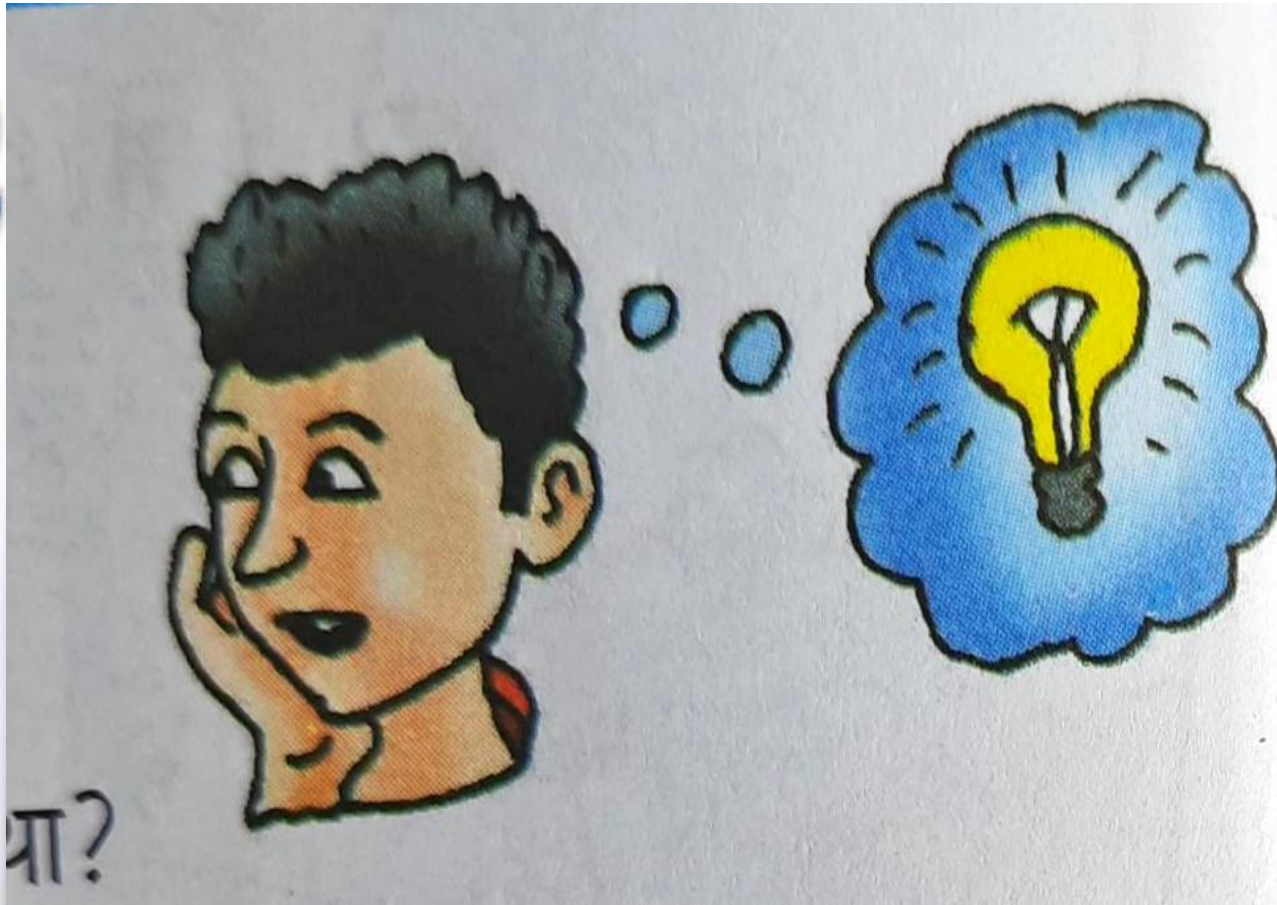

नजानू को खेलने के लिए मनाते हुए दोस्त

नजानू की कविता रचने की प्रतिभा की परख करते हुए गुलदस्ता

अपनी रची हुई कविता दोस्तों को सुनाते हुए

दोस्तों की शरारत का शिकार नजानू

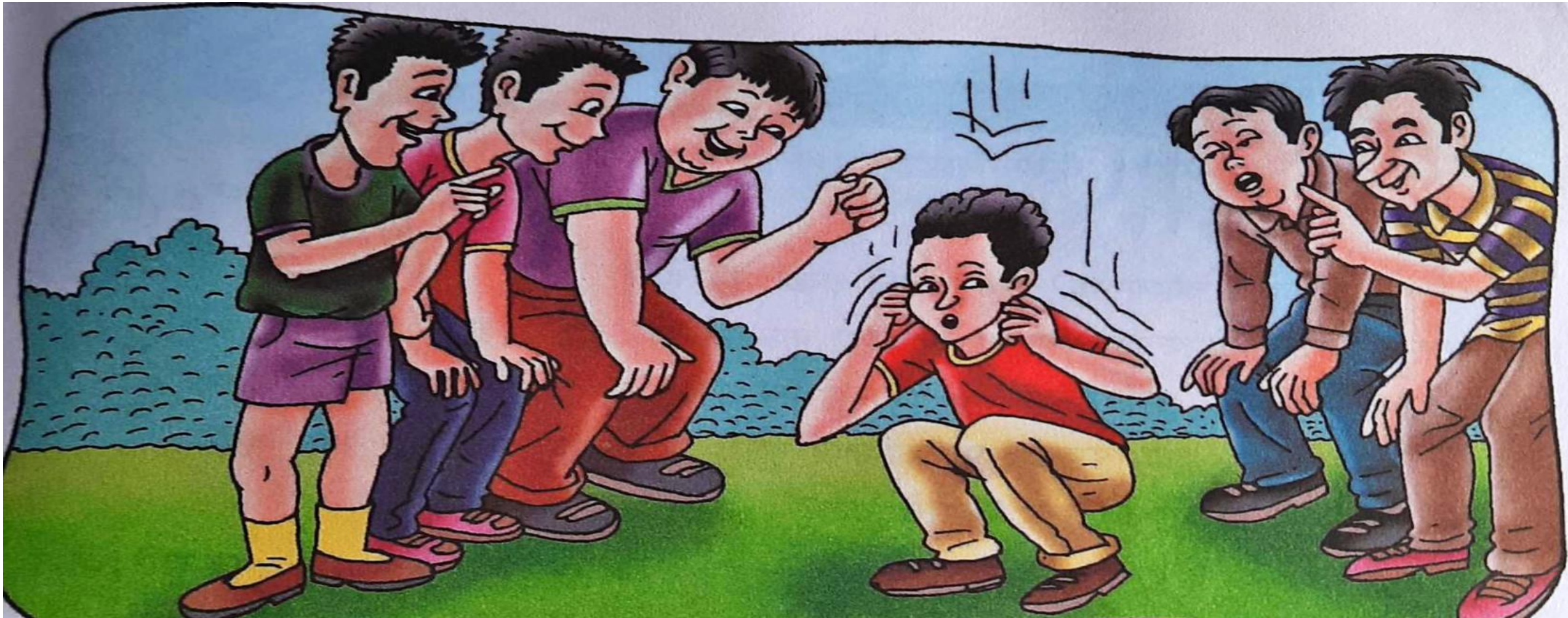

1. नजानू कविता कहना चाहता था। उसकी इच्छा तो पूरी हुई पर उसे उठक-बैठक लगानी पड़ी।

2. गुलदस्ता नजानू को कविता लिखना सिखाने से यह परखना चाहता था कि नाजानू को तुक (Rhythm) बनाना आता है या नहीं क्योंकि कविता लिखने में तुक का आना बहुत ज़रूरी होता है।

3. गुलदस्ता जब नजानू की तुक बनाने की प्रतिभा की परख कर रहा था तब नजानू ने कुछ तुक तो बनाए परंतु वे तुक अर्थहीन थे, बावजूद इसके वह ये मानने को तैयार नहीं था। गुलदस्ता को लगा कि इससे पीछा छुड़ाने के लिए यह कह देना उचित होगा कि तुममें कविता रचने की प्रतिभा है।

4. जब नजानू ने जानू को कविता सुनाई तो चिढ़ते हुए जानू ने नजानू से कहा ,"मैं मोटर की छत पर कब कूदा?" और सुस्तराम ने नाराज़ होते हुए कहा, "झूठ, सफेद झूठ ! मेरी जेब में कोई सेब नहीं है। लो देख लो।"

5. क. छोटू ने नजानू से कहा
ख. गुलदस्ता ने नजानू से कहा
ग. मोटू ने नजानू से कहा
घ. नजानू ने सभी बच्चों से कहा

6. क. नहीं
ख. हाँ
ग. नहीं
घ. हाँ
ङ. हाँ

धन्यवाद